गुप्त साम्राज्य एवं स्वर्ण युग

(Gupta Empire and Golden Age)

गुप्तवंशीय सम्राटों ने प्राचीन भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की और लंबे समय तक शासन किया। अपने इस शासन काल के दौरान कई गुप्त सम्राटों ने न केवल भारत को राजनीतिक एकता, सुरक्षा और शान्ति प्रदान की, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं कला आदि हर क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की।

गुप्त सम्राटों के लगातार प्रयासों से गुप्तकाल में जो चहुंमुखी विकास हुआ, वैसा इससे पहले कभी नहीं हुआ था। यही मुख्य कारण है कि स्मिथ, मुखर्जी, त्रिपाठी आदि विद्वानों ने गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा है। इसके अलावा, इतिहासकार बार्नेट ने गुप्तकाल की तुलना यूनान के सम्राट 'पेरिक्लीज' के स्वर्ण युग से की है। इस संबंध में उन्होंने लिखा है कि —"प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्तकाल का वही महत्व है जो यूनानी इतिहास में 'पेरिक्लीज' के युग का है।"

गुप्तकाल को स्वर्ण युग मानने के मुख्य आधार

गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग निम्नलिखित मुख्य बातों के आधार पर माना जाता है:

1. महान सम्राटों का युग

गुप्तकाल में अनेक महान सम्राट हुए जिन्होंने अपने शासनकाल में असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया। इन सम्राटों में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त प्रथम, स्कन्दगुप्त आदि प्रमुख थे। इन सभी सम्राटों ने एक संगठित और विस्तृत गुप्त साम्राज्य का निर्माण किया तथा अपनी विजय पताका दूर-दूर तक फैलाई।

इन महान शासकों ने अश्वमेध यज्ञ किए तथा अपनी वीरता के अनुसार अनेक भव्य उपाधियाँ धारण कीं, जैसे — महाराजाधिराज, पराक्रम, अप्रतिरथ, व्याघ्रपराक्रम, अश्वमेध पराक्रम, परम भागवत, श्री भट्टारक, विक्रमादित्य, विक्रमांक, सिंहविक्रम, बालादित्य, महेन्द्रादित्य, शक्रादित्य आदि। लगभग इन सभी सम्राटों ने अपनी प्रजा के साथ हमेशा पिता के समान प्रेमपूर्ण और न्यायसंगत व्यवहार किया।

2. राजनीतिक एकता का युग

सम्राट अशोक की मृत्यु के बाद पूरा भारत छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया था और देश की राजनीतिक एकता समाप्त हो गई थी। गुप्त सम्राटों ने अपने अथक प्रयासों से इस खोई हुई राजनीतिक एकता को फिर से प्राप्त किया और अपनी विजय यात्राओं के माध्यम से लगभग संपूर्ण भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बांध दिया।

गुप्त सम्राटों ने भारत का एकीकरण करने के साथ-साथ यहाँ से विदेशी राज्यों को पूरी तरह समाप्त कर दिया और भारत में पुनः स्वतंत्र हिंदू राज्य स्थापित किया। इस विषय में श्री वेदव्यास ने लिखा है कि — "विदेशियों की पराजय उस राष्ट्रीय पुनर्जागरण का राजनीतिक पहलू था, जो गुप्तकाल की सबसे बड़ी विशेषता थी।"

3. शांति और सुव्यवस्था का युग

गुप्तकाल एक ऐसा सुनहरा युग था, जिसमें चारों तरफ शांति और सुव्यवस्था कायम थी तथा आम लोगों को अपनी उन्नति करने के पूरे अवसर प्राप्त हुए थे। उस समय चीन से आए प्रसिद्ध यात्री फाहान ने यहाँ की सुव्यवस्था के विषय में लिखा है कि विदेशी यात्री होने के बावजूद उसे न तो कभी रास्ते में लूटा गया और न ही उसकी कोई वस्तु चुराई गई।

फाहान के अनुसार उस समय देश के लोगों के पास अपार धन-दौलत थी और गुप्तकालीन व्यापार मुख्य रूप से शुद्ध सोने के सिक्कों (दीनार) से होता था। इससे स्पष्ट होता है कि उस काल में चारों तरफ सुख-समृद्धि व्याप्त थी।

4. साहित्य की अभूतपूर्व उन्नति

गुप्तकाल में संस्कृत भाषा और साहित्य की अत्यधिक उन्नति हुई। इस काल में अनेक प्रसिद्ध विद्वान हुए जिन्होंने प्रचुर मात्रा में उच्च कोटि का साहित्य रचा। महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध रचनाएं — 'कुमारसंभवम्', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम', 'मेघदूतम्', 'रघुवंशम्', 'ऋतुसंहार', और 'विक्रमोर्वशीयम्' इसी काल की देन हैं।

इसके अलावा विशाखदत्त के नाटक 'देवी चन्द्रगुप्तम्' और 'मुद्राराक्षस', भारवि का महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्', शूद्रक का नाटक 'मच्छकटिकम्', सुबंधु की रचना 'वासवदत्ता', विष्णुशर्मा की अमर

कहानियाँ 'पंचतंत्र', और अमरसिंह का शब्दकोश 'अमर कोष' आदि इस काल की महान साहित्यिक कृतियाँ हैं। बौद्ध और जैन धर्म से जुड़े विद्वान जैसे बुद्ध घोष, बसुबंधु, बौद्धदत्त, आर्यदेव, असंग, दिग्नाग, भद्रबाहु द्वितीय, सिद्धसेन और उमास्वाति भी इसी काल में हुए।

5. विज्ञान और गणित की उन्नति का युग

गुप्तकाल विज्ञान और गणित के क्षेत्र में भारी प्रगति का काल था। ज्योतिष, गणित और चिकित्सा विज्ञान से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना इसी समय हुई। गणित के क्षेत्र में दशमलव प्रणाली का विकास इसी युग की सबसे बड़ी देन है।

प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'आर्यभट्टीम' इसी काल में लिखा। इसके अलावा ज्योतिष आचार्य वराहमिहिर की 'पंचसिद्धान्तिका', आयुर्वेद शास्त्री वाग्भट का 'अष्टांग हृदय', पशुचिकित्सक पालकप्य का 'हस्त्युर्वेद' और महान आयुर्वेद शास्त्री धन्वन्तरि भी इसी स्वर्ण युग के महान रत्न थे।

6. कला, वास्तुकला और मूर्तिकला का विकास

गुप्तकाल में वास्तुकला, शिल्प कला, मूर्ति निर्माण, चित्रकला और संगीत कला की अभूतपूर्व उन्नति हुई। राजाओं के महल, विशाल स्तंभ, बौद्ध स्तूप, चैत्य, विहार, गुफाएं और भव्य मंदिरों के निर्माण से वास्तुकला को नई ऊंचाइयां मिलीं। सारनाथ का धमेख स्तूप, उदयगिरि की गुफाएं, नालंदा के विहार, महरौली का लौह स्तंभ, भूमरा का शिव मंदिर, नचना कुठार का पार्वती मंदिर, देवगढ़ का दशावतार मंदिर, और भीतरगाँव का ईंटों का मंदिर इस काल की वास्तुकला के प्रमुख और जीवंत उदाहरण हैं।

मूर्तिकला के क्षेत्र में मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र प्रमुख केंद्र थे। बैठी हुई बुद्ध मूर्ति (सारनाथ), खड़ी हुई बुद्ध मूर्ति (मथुरा), वराहवतार मूर्ति (उदयगिरि), गोवर्द्धनधारी कृष्ण मूर्ति (काशी), और शेषाशायी विष्णु मूर्ति (देवगढ़) इस काल की उत्कृष्ट मूर्तियां हैं।

इसी प्रकार चित्रकला के अद्भुत नमूने हमें अजंता, एलोरा, वाघ, बादामी और सित्तनवासल की गुफाओं में देखने को मिलते हैं। चित्रकला के साथ-साथ संगीत कला की भी भरपूर उन्नति हुई, और अनेक गुप्त सम्राटों का संगीत प्रेमी होना इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है।

7. धार्मिक सहिष्णुता का युग

गुप्तकाल में धार्मिक सहिष्णुता सर्वत्र देखने को मिलती है। यद्यपि देश में विभिन्न धर्मों के अनुयायी निवास करते थे, परंतु फिर भी कभी भी धर्म के नाम पर किसी प्रकार की हिंसा या द्वेष नहीं हुआ। इस काल में ब्राह्मण धर्म (सनातन धर्म), जैन धर्म और बौद्ध धर्म सभी बहुत प्रचार-प्रसार में थे और शांतिपूर्वक अस्तित्व में थे।

ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत भगवान विष्णु की उपासना का अत्यधिक महत्व था। साथ ही शिव पूजा और सूर्य उपासना के भी प्रचुर प्रमाण मिलते हैं। देवी पूजा के अंतर्गत लक्ष्मी, दुर्गा और पार्वती आदि देवियों की भी विशेष पूजा की जाती थी। इसके साथ ही जैन और बौद्ध धर्म से जुड़ी मूर्तियां और अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि उस समाज में सभी धर्मों का आदर किया जाता था और भाईचारा बना हुआ था॰

उपर्युक्त सभी तथ्यों के विश्लेषण से यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि गुप्तकाल वस्तुतः भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग था। इस काल में न केवल राजनीतिक सुदृढ़ता, शांति एवं सुरक्षा स्थापित हुई, बल्कि साहित्य, विज्ञान, गणित, वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला जैसे हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति देखने को मिली। शासकों की उदार नीतियों, धार्मिक सहिष्णुता और चहुंमुखी विकास ने भारतीय संस्कृति को उस ऊँचाई पर पहुँचाया, जिसकी मिसाल प्राचीन विश्व के इतिहास में दुर्लभ है।